जुलाई 2024 वर्ष 3, अंक 6

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

“सफलता के चक्र (cycles) होते हैं... और असफलता के चक्र, जब चीजें बिखर जाती हैं और आपको नई चीजों के लिए जगह बनाने के लिए उन्हें जाने देना पड़ता है... अगर आप उस समय विरोध करते हैं, तो इसका मतलब है कि आप जीवन के प्रवाह के साथ जाने से इनकार कर रहे हैं। आपको कष्ट होगा।”

— एक्हार्ट टॉल्ल

खण्ड

खंड क : डी.ई.आई.....3

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा.....6

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI).....10

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड कः डी.ई.आई.

1. 'इंपैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन द बायोलॉजिकल सिस्टम' विषय पर अल्पकालिक कार्यशाला का आयोजन..... 3
2. शिक्षा और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में सांख्यिकी विषय पर एफ डी पी का आयोजन 3
संकाय समाचार..... 4
3. विज्ञान विभाग..... 4
स्टाफ समाचार:..... 4
छात्रोपलब्धियाँ:..... 4
स्कूल समाचार..... 5
4. डी.ई.आई. बोर्ड स्कूलों के लिए कई कार्यशालाएँ आयोजित की गईं..... 5
अन्य कार्यशालाएँ:..... 5
5. प्रेम विद्यालय गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज..... 5
छात्रोपलब्धियाँ:..... 5

खंड खः डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

6. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से..... 6
7. एस डी जी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) स्कोरकार्ड – प्रगति रिपोर्ट..... 7
8. केन्द्रों से समाचार..... 8
सैन फ्रांसिस्को के पड़ोस में नदी और तटीय सफाई का आयोजन किया गया..... 8
कुर्नूल केंद्र में टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग में इंटर्नशिप प्रशिक्षण दिया गया..... 9
करोल बाग सेंटर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया..... 9

खंड गः डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

9. संपादक की डेस्क से..... 10
10. स्वास्थ्य और दयालबाग जीवन शैली..... 10
डॉ. शेलिका रत्नाकर
11. महाभारत में धर्म के विचार पर चिंतन..... 11
डॉ. स्मिता सहगल
12. एक आह्वान..... 12
प्रिया सिंह
13. पूर्व छात्रों की बाइट्स..... 12
दयालबाग में शिक्षा से सबसे बड़ी उपलब्धि यह है...
प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 12

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

'इंपैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन द बायोलॉजिकल सिस्टम' विषय पर अल्पकालिक कार्यशाला का आयोजन

भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ–दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट–शैक्षणिक और प्रशासनिक विकास केंद्र (ए आई यू–डी.ई.आई. –ए एडी सी) ने 15 से 20 अप्रैल, 2024 तक दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय), दयालबाग़, आगरा–282005 के प्राणीशास्त्र विभाग के सहयोग से जलवायु परिवर्तन के जैविक प्रणालियों पर प्रभाव विषय पर एक अल्पकालिक कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला का उद्देश्य पारिस्थितिकी तंत्र, मानव स्वास्थ्य और जैव विविधता सहित विभिन्न जीवन प्रणालियों पर जलवायु परिवर्तन के गहन प्रभावों पर प्रकाश डालना था। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के वन्यजीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अफीफुल्ला खान, फ्लोरिडा, यूएसए के विंडसर विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपाध्यक्ष डॉ. इंद्रजीत सिन्हा, आगरा के दयालबाग़ में ज़ीरो एनर्जी सॉल्यूशंस के सी ई ओ श्री पंकज गुप्ता, मथुरा के फराह में केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (आई सी ए आर) के पशु स्वास्थ्य प्रभाग के उप निदेशक डॉ. अशोक कुमार, टेक्सास के ह्यूस्टन कम्युनिटी कॉलेज की प्रोफेसर विमला रानी चोपड़ा, रिलायंस चिड़ियाघर एवं पुनर्वास केंद्र, जामनगर, गुजरात के निदेशक डॉ. बृज किशोर गुप्ता, अशोका विश्वविद्यालय, दिल्ली के मनोविज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर और प्रमुख डॉ. सिमंतिनी घोष उपस्थित थीं। सत्रों की अध्यक्षता प्रोफेसर अलका प्रकाश, प्रोफेसर शब्द प्रीत, डॉ.अमला चोपड़ा और डॉ. ललित मोहन, प्राणीशास्त्र विभाग, विज्ञान संकाय, डी.ई.आई. ने की। कार्यशाला की शुरुआत प्रोफेसर सी.आर. बाबू, अध्यक्ष, पर्यावरण अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु परिवर्तन के लिए अनुकूलन और लचीलापन बनाने के लिए प्रकृति आधारित समाधानों पर एक व्यावहारिक उद्घाटन वार्ता के साथ हुई, जबकि उद्घाटन भाषण प्रोफेसर आर.जे. राव, पूर्व कुलपति, बर्कतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल ने दिया।

कार्यशाला के संयोजक प्रो. संत प्रकाश ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन ने की। कार्यक्रम की सह–संयोजक डॉ. अमला चोपड़ा ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। डॉ. रेशमा भटनागर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

रेवेंशॉ विश्वविद्यालय, कटक के पूर्व कुलपति और इंडियन एकेडमी ऑफ न्यूरोसाइंसेज़ के अध्यक्ष प्रो. ईशान पात्रो समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डॉ. अमला चोपड़ा ने कार्यशाला की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यशाला विषय से संबंधित पारस्परिक संवादात्मक सत्रों के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे पोस्टर प्रस्तुतियां, कोलाज, नारा–लेखन, कविता–रचना, आशुभाषण भाषण और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं के तैंतीस विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । डी.ई.आई. के प्राणीशास्त्र विभाग के छात्रों द्वारा नुक्कड़ नाटक और एक स्किट–'अप्रत्याशित सभा' का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

शिक्षा और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में सांख्यिकी विषय पर एफ डी पी का आयोजन

भारतीय विश्वविद्यालय संघ–दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट–शैक्षणिक और प्रशासनिक विकास केंद्र (ए आई यू–डी.ई.आई.–ए ए डी सी) ने शिक्षा संकाय, डी.ई.आई. के सहयोग से 22 से 31 मई, 2024 तक शिक्षा और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में सांख्यिकी पर दस दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (Faculty Development Programme,FDP) का आयोजन किया। एफ डी पी ने अनुसंधान प्रयासों में सांख्यिकी की भूमिका की जांच करने का अवसर प्रदान किया। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को आर सॉफ्टवेयर का उपयोग करके पारस्परिक संवादात्मक सत्रों के माध्यम से कई उपयोगी सांख्यिकीय डेटा विश्लेषण विधियों की मूल बातें प्रशिक्षित करना था। आर सांख्यिकीय कंप्यूटिंग और ग्राफिक्स के लिए एक ओपन–सोर्स प्रोग्रामिंग भाषा और वातावरण है जो विभिन्न सांख्यिकीय और ग्राफिकल तकनीक प्रदान करता है। व्यापक पाठ्यक्रम सामग्री में सोलह विषय विशेषज्ञों द्वारा कुशलता से तैयार किए गए बीस सत्र थे। विभिन्न स्थानों से 88 प्रतिभागियों ने मिश्रित मोड में कार्यक्रम में भाग लिया।

उद्घाटन कार्यक्रम में शिक्षा संकाय की संकाय प्रमुख प्रो. नंदिता सतसंगी ने अतिथियों और प्रतिभागियों का औपचारिक स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. एन पी एस चंदेल ने इसके उद्देश्यों की व्याख्या की। डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन ने विभिन्न सॉफ्टवेयर और कार्यक्रमों का उपयोग करके कम्प्यूटेशनल कौशल विकसित करने और बड़े डेटा को संभालने और उसका विश्लेषण करने की आवश्यकता पर बल दिया। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर के कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सामाजिक विज्ञान और शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकी के महत्त्व को स्पष्ट किया। डी.ई.आई. के विज्ञान संकाय के गणित विभाग के प्रो. गुरसरन ने सांख्यिकी में 'आर' प्रोग्रामिंग के परिचय पर व्याख्यान दिया। डी.ई.आई. के शिक्षा संकाय की बी.एड. विभागाध्यक्ष प्रो. सविता श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यशाला में कई प्रतिष्ठित विषय विशेषज्ञ उपस्थित थे, जिनमें अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आबिद सिद्दीकी, आई आई टी कानपुर के प्रोफेसर शलभ, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन सी ई आर टी, भोपाल के प्रोफेसर एन सी ओझा और डॉ. अश्वनी गर्ग, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रोफेसर राविंस, सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा की प्रोफेसर नमिता श्रीवास्तव, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान के प्रोफेसर अजय सुराना, आर्थिक अध्ययन एवं योजना केंद्र, जे एन यू के डॉ. मनोज कुमार, एन आई आई टी विश्वविद्यालय, नीमराणा, राजस्थान की डॉ. कीर्ति जैन थीं। सत्राध्यक्ष प्रो.सविता श्रीवास्तव, प्रो. मुकेश गौतम, प्रो. पी एस त्यागी, प्रो. सोना आहूजा, प्रो. मीनू सिंह, प्रो. लाजवंती और डॉ. नेहा जैन थीं। समापन सत्र के दौरान, शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर के कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने क्लस्टर विश्लेषण पर अपना व्याख्यान दिया, और संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ के बायोस्टैटिस्टिक्स विभाग के डॉ. अनूप कुमार ने आर (R) का उपयोग करते हुए फैक्टर विश्लेषण पर अपना व्याख्यान दिया।

संकाय समाचार

विज्ञान विभाग

स्टाफ समाचार:

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर सुखदेव रॉय को 2023–24 के लिए इंजीनियरिंग विज्ञान के लिए नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज़ इंडिया (एन ए एस आई) फेलोशिप चयन समिति के सदस्य के रूप में नामित किया गया था और उन्होंने 9–10 जुलाई, 2024 को इसकी बैठक में भाग लिया। उन्होंने IEEE Access and Applied Physics Letters के शोध पत्रों की समीक्षा की। उन्होंने जून–जुलाई 2024 के दौरान "Theoretical Study of Nonlinear Absorption in Organic Materials" विषय पर IASc-NASI-INSA संयुक्त ग्रीष्मकालीन अनुसंधान फैलोशिप कार्यक्रम के तहत मद्रास विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की एम.एससी. भौतिकी छात्रा सुश्री निथ्या प्रिया का भी शोध निर्देशन किया।

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग की डॉ. सोनाली भटनागर को इंटर–यूनिवर्सिटी एक्सेलेरेटर सेंटर, नई दिल्ली में 22 से 26 अप्रैल, 2024 तक आयोजित डिटेक्टरों और GEANT4 सिमुलेशन पर स्कूल–सह–प्रशिक्षण के लिए एक विषय विशेषज्ञ व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया था। 'GEANT4– टूलकिट', 'ज्यामिति में अनुप्रयोग', 'ऊर्जा जमाव' और 'अकार्बनिक', 'कार्बनिक सिंटिलेशन डिटेक्टर की डिटेक्टर दक्षता' शीर्षक वाले उनके व्याख्यान 45 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोधार्थियों को दिए गए थे।

छात्रोपलब्धियाँ:

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग में शोधार्थी सुश्री के. राम्या को 'Study of Fault-Tolerant Quantum Computing with Qudits' विषय पर पी. एच डी के लिए विज्ञान और इंजीनियरिंग में 2024–26 की अवधि के लिए डी एस टी महिला–किरण (वाइज–किरण) फैलोशिप से 20.22 लाख रुपये से सम्मानित किया गया।

स्कूल समाचार

डी.ई.आई. बोर्ड स्कूलों के लिए कई कार्यशालाएँ आयोजित की गईं

डी.ई.आई. बोर्ड स्कूलों के कक्षा V से XII के छात्रों के लिए 22 से 29 मई, 2024 तक एक कोडिंग और एस टी ई एम (STEMविज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित) कार्यशाला का आयोजन किया गया था। विज्ञान और इंजीनियरिंग संकाय, डी.ई.आई. के प्रोफेसर कार्यशाला के लिए विषय विशेषज्ञ थे। प्रत्येक दिन तीन सत्र होते थे (i) लड़कियों के लिए पायथन कोडिंग का व्यावहारिक अभ्यास (ii) लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए एस टी ई एम सत्र (iii) लड़कों के लिए पायथन कोडिंग का व्यावहारिक अभ्यास।

एस टी ई एम सत्र इंटरैक्टिव थे और इसमें 'क्वांटम क्लाउड कंप्यूटिंग', 'फंडामेंटल पार्टिकल्स एंड देयर क्वांटम वर्ल्ड', 'मेकिंग लाइट वर्क', 'सिग्नलिंग इन ब्रेन', 'ग्रीन टेक्नोलॉजी', 'ड्रोन टेक्नोलॉजी' और ' विज्ञान और चेतना में बड़ी चुनौतियाँ' जैसे विषयों पर सत्र शामिल थे। कार्यशाला में आगरा, राजबरारी, दिल्ली में डी.ई.आई. बोर्ड के स्कूलों और दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र और गुजरात के रा धा स्व आ मी सतसंग एसोसिएशनों से 265 छात्रों ने भाग लिया।

अन्य कार्यशालाएँ:

कक्षा V से VII के डी.ई.आई. बोर्ड स्कूल के छात्रों के लिए 3 जून से 15 जून 2024 के बीच कई अन्य एक–सप्ताह की कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जैसे (i-c-n-c) TALL (सूचना–संचार–न्यूरो संज्ञानात्मक प्रौद्योगिकी सहायता प्राप्त भाषा प्रयोगशाला) में प्रौद्योगिकी के माध्यम से संस्कृत और अंग्रेजी सीखना, खेल और पहेलियों के साथ गणित सीखना और नाटक के माध्यम से अंग्रेजी सीखना।

प्रेम विद्यालय गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज

छात्रोपलब्धियाँ:

- बारहवीं कक्षा की सुश्री अंजलि को दूरी और फील्ड सिग्नल को पहचानने में दूसरे स्तर के लिए एन सी सी में चुना गया ।
- बारहवीं कक्षा की सुश्री अनीशा, सुश्री अंजलि और सुश्री दृष्टि जौहरी ने 24 जून से 5 जुलाई, 2024 तक सदर, आगरा में 'मिलिट्री हॉस्पिटल अटैचमेंट कैंप' में भाग लिया और भागीदारी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

- कक्षा सातवीं की सुश्री दृष्टि दुबे ने 10 से 14 जुलाई, 2024 तक लखनऊ में आयोजित यू पी–स्टेट ताइक्वांडो चौम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। बारहवीं कक्षा की सुश्री नेहा ने ताइक्वांडो चौम्पियनशिप में भाग लिया और जिला स्तरीय स्वर्ण पदक हासिल किया।

दृष्टि दुबे

नेहा

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने वर्ष 2015 में बैठक की और गरीबी को समाप्त करने, ग्रह की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने के लिए सार्वभौमिक आह्वान के रूप में 17 सतत विकास लक्ष्यों को अपनाया कि वर्ष 2030 तक सभी लोग शांति और समृद्धि का आनंद लें। मध्यावधि समीक्षा प्रत्येक एस डी लक्ष्य के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में हुई प्रगति संयुक्त राष्ट्र द्वारा वैश्विक स्तर पर की गई थी। सर्वेक्षण के परिणामों वाली 'सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट 2024' वर्ष 2024 में जारी की गई थी।

इस रिपोर्ट की कुछ मुख्य बातें नीचे प्रस्तुत की गई हैं:

रिपोर्ट से पता चलता है कि दुनिया 2030 के एजेंडे को साकार करने के लिए गंभीर रूप से पटरी से उतर गई है। 17 लक्ष्यों के लिए 169 लक्ष्यों में से 135 का आकलन 2015 बेसलाइन से उपलब्ध रुझान डेटा का उपयोग करके किया जा सकता है, जबकि 34 लक्ष्यों के लिए पर्याप्त रुझान डेटा का अभाव है। 2015–2024 के वैश्विक समग्र डेटा के आधार पर लक्ष्यों में समग्र प्रगति इस प्रकार है:

(i) लक्ष्य की ओर अग्रसर या लक्ष्य प्राप्ति : 17%
(ii) मध्यम प्रगति : 18%,
(iii) सीमांत प्रगति : 30%,
(iv) ठहराव (Stagnation) : 18%, और
(v) प्रतिगमन (Regression) : 17% .

उपरोक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि जब हम एस डी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति का पता लगाते हैं, तो हम पाते हैं कि यह या तो धीमी हो गई है, रुक गई है या उलट गई है। इस निराशाजनक परिणाम को संयुक्त राष्ट्र के महासचिव द्वारा 2024 की रिपोर्ट में दिए गए प्रस्तावना में व्यक्त किया गया है – जिसके कुछ अंश नीचे दिए गए हैं:

- कोविड–19 महामारी के भयावह प्रभाव, बढ़ते संघर्ष, भू–राजनीतिक तनाव और बढ़ती जलवायु अराजकता सतत विकास लक्ष्य की प्रगति को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं।
- असमानताएँ बढ़ती जा रही हैं...यह स्थिति अपने आप नहीं सुधरने वाली है।
- इस पृष्ठभूमि में, 2030 के एजेंडे के पीछे सरकारों की दृढ़ एकता, जैसा कि सितंबर 2023 में SDG शिखर सम्मेलन में प्रदर्शित किया गया, आशा की एक किरण प्रदान करती है।
- इन हरे अंकुरों को त्वरित और परिवर्तनकारी प्रगति में बदलने के लिए, तीन मोर्चों पर साहसिक कार्रवाई की आवश्यकता है:
  – सबसे पहले, हमें शांति चाहिए,
  – दूसरा, हमें एकजुटता की आवश्यकता है, और
  – तीसरा, हमें कार्यान्वयन में तेजी लाने की जरूरत है।
- अब जबकि छह वर्ष से अधिक का समय बचा है, हमें गरीबी समाप्त करने, ग्रह की रक्षा करने तथा किसी को भी पीछे न छोड़ने के अपने 2030 के वादे को पूरा करने में पीछे नहीं हटना चाहिए।

हम आदरणीय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी और डॉ. अर्श धीर द्वारा लिखित पुस्तक 'सतत् विकास को प्राप्त करने में समुदायों की भूमिका' के लोकार्पण को याद करते हुए समापन करना चाहेंगे, जो सतत विकास लक्ष्यों में तेजी से प्रगति हासिल करने के लिए एक उन्नत अभिनव रूपरेखा प्रस्तुत करती है (विवरण के लिए कृपया पुस्तक देखें या डी.ई.आई. मासिक समाचार, मई 2024 में प्रस्तुत पुस्तक की संक्षिप्त समीक्षा देखें।)

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

एस डी जी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) स्कोरकार्ड – प्रगति रिपोर्ट

लक्ष्य 4 इस प्रकार है: समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना तथा सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित 'सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट 2024', निर्धारित लक्ष्यों के आधार पर एसडीजी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) के लिए निम्नलिखित पांच सूचकांकों के संदर्भ में वैश्विक प्रगति मूल्यांकन के परिणाम को बताती है:

(i) लध्य प्राप्ति की ओर या लक्ष्य प्राप्ति : 18%
(ii) मध्यम प्रगति : 18%,
(iii) सीमांत प्रगति : 17%,
(iv) ठहराव (Stagnation) : 30%, और
(v) प्रतिगमन (Regression) : 17%.

यूनेस्को ने एसडीजी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) का एक बहुत विस्तृत स्कोरकार्ड प्रकाशित किया है, जिसमें इस लक्ष्य के निम्नलिखित लक्ष्यों द्वारा की गई मध्यावधि (2015–2024) प्रगति का आकलन वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया गया है: सात परिणाम लक्ष्य: 4.1 से 4.7 और कार्यान्वयन के तीन साधन लक्ष्य: 4.ए से 4.सी।

लक्ष्य–वार प्रगति इस प्रकार है:

लक्ष्य	प्रगति
4.1 2030 तक, सुनिश्चित करें कि सभी लड़कियां और लड़के निःशुल्क, समान और गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पूरी करें, जिससे प्रासंगिक और प्रभावी शिक्षण परिणाम प्राप्त हों	ठहराव (Stagnation)
4.2 2030 तक, सुनिश्चित करें कि सभी लड़कियों और लड़कों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बचपन विकास, देखभाल और पूर्व–प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच हो, ताकि वे प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार हों	ठहराव
4.3 2030 तक, सभी महिलाओं और पुरुषों के लिए किफायती और गुणवत्तापूर्ण तकनीकी, व्यावसायिक और तृतीयक शिक्षा, जिसमें विश्वविद्यालय शिक्षा भी शामिल है, तक समान पहुँच सुनिश्चित करें	अपर्याप्त डेटा
4.4 2030 तक, रोजगार, सभ्य नौकरियों और उद्यमिता के लिए तकनीकी और व्यावसायिक कौशल सहित प्रासंगिक कौशल रखने वाले युवाओं और वयस्कों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि करें	अपर्याप्त डेटा
4.5 2030 तक, शिक्षा में लैंगिक असमानताओं को समाप्त करें और विकलांग व्यक्तियों, स्वदेशी लोगों और कमजोर परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों सहित कमजोर लोगों के लिए शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के सभी स्तरों तक समान पहुँच सुनिश्चित करें	ट्रैक पर या लक्ष्य पूरा हुआ
4.6 2030 तक, सुनिश्चित करें कि सभी युवा और वयस्कों का एक बड़ा हिस्सा, पुरुष और महिला दोनों, साक्षरता हासिल करें और संख्यात्मकता	अपर्याप्त डेटा
4.7 2030 तक, सुनिश्चित करें कि सभी शिक्षार्थी सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करें, जिसमें अन्य बातों के अलावा, सतत विकास और सतत जीवन शैली, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, शांति और अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देना, वैश्विक नागरिकता और सांस्कृतिक विविधता की सराहना और सतत विकास में संस्कृति के योगदान के लिए शिक्षा शामिल है	अपर्याप्त डेटा
4.क ऐसी शिक्षा सुविधाओं का निर्माण और उन्नयन करें जो बाल, विकलांगता और लिंग के प्रति संवेदनशील हों और सभी के लिए सुरक्षित, अहिंसक, समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण प्रदान करें	मामूली प्रगति, जिसे अधिक तेज करने की आवश्यकता
4.ख 2020 तक, विकासशील देशों, विशेष रूप से कम विकसित देशों, छोटे द्वीप विकासशील राज्यों और अफ्रीकी देशों में व्यावसायिक प्रशिक्षण और सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, तकनीकी, इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक कार्यक्रमों सहित उच्च शिक्षा में नामांकन के लिए उपलब्ध छात्रवृत्तियों की संख्या में वैश्विक स्तर पर पर्याप्त रूप से विस्तार करें	मध्यम प्रगति, लेकिन तेज करने की आवश्यकता
4.ग 2030 तक, विकासशील देशों, विशेष रूप से कम विकसित देशों और छोटे द्वीप विकासशील राज्यों में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से योग्य शिक्षकों की आपूर्ति में पर्याप्त वृद्धि करें	प्रतिगमन (Regression)

17 जुलाई, 2024 के टाइम्स ऑफ इंडिया में एस डी जी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) यूनेस्को स्कोरकार्ड की विषय–वस्तु की रिपोर्ट करते हुए निम्नलिखित दो बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है:

(i) भारत उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने में संघर्ष करता है: एक बड़ी चिंता उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा पूर्ण करने की दर है, जो वर्तमान में 51% है, भारत कई मध्यम आय वाले देशों से पीछे है – माध्यमिक शिक्षा के अंत तक छात्रों को समर्थन देने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

(ii) सीखने की दक्षता संबंधी चुनौतियाँ:

न्यूनतम सीखने की दक्षता, विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के अंत में पढ़ने में, शैक्षिक गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। भारत को इस मामले में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि छात्रों की एक बड़ी आबादी आवश्यक दक्षता के स्तर को पूरा नहीं कर पा रही है।

अभिस्वीकृति:

इस आलेख को तैयार करने में प्रो. पमी दुआ द्वारा प्रदान की गई सहायता के लिए हम उनके आभारी हैं।

संकलित एवं संयोजित
प्रो. वीबी गुप्ता, समन्वयक, डी.ई.पी–डी.ई.आई

केन्द्रों से समाचार

सैन फ्रांसिस्को के पड़ोस में नदी और तटीय सफाई का आयोजन किया गया

विश्व पर्यावरण दिवस के लिए सूचीबद्ध गतिविधियों के साथ, सैन फ्रांसिस्को केंद्र ने 18 मई 2024 को सैन फ्रांसिस्को के पड़ोस में नदी और तटीय सफाई अभियान चलाया। केंद्र के लगभग 25 सदस्यों ने एक स्थानीय नदी के 1.5 किलोमीटर की सफाई में भाग लिया। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में नदियों और खाड़ियों को साफ करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी गतिविधि के हिस्से के रूप में किया गया था। प्रतिभागियों ने शहर की नगरपालिका के लिए कचरा एकत्र किया और उसे रीसायकल करने के लिए बैग में भरा। सैन फ्रांसिस्को केंद्र के सदस्य नियमित रूप से ऐसी गतिविधियों में भाग लेते रहे हैं। पिछले तटीय और नदी सफाई सत्रों में 20–25 सदस्य शामिल हुए हैं और नदी के किनारे 3 किलोमीटर तक की सफाई की है। इस तरह के प्रयासों की मान्यता में कैलिफोर्निया स्टेट सीनेट द्वारा 2019 में केंद्र को एक प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया था।

कुर्नूल केंद्र में टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग में इंटर्नशिप प्रशिक्षण दिया गया

डी.ई.आई. सूचना केंद्र, कुरनूल ने 18 जनवरी, 2024 से 18 अप्रैल, 2024 तक केंद्र में 3 महीने के लिए के वी आर गवर्नमेंट कॉलेज फॉर विमेन, कुरनूल के छात्रों को टी डी एंड पी कोर्स में इंटर्नशिप प्रशिक्षण प्रदान किया। यह के वी आर जी सी डब्ल्यू कॉलेज के इंटर्नशिप छात्रों का दूसरा बैच है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम सप्ताह में 18 अप्रैल, 2024 को, इन छात्रों द्वारा डिज़ाइन और बनाए गए उत्पादों की एक प्रदर्शनी सह बिक्री के वी आर कॉलेज में आयोजित की गई थी, जो शहर के मध्य में स्थित है। के वी आर कॉलेज के प्रिंसिपल प्रोफेसर कुमार गारू ने प्रदर्शनी सह बिक्री का उद्घाटन किया। के वी आर कॉलेज और डी.ई.आई. सूचना केंद्र दोनों के कर्मचारी इस समारोह में शामिल हुए।

प्रो. गारू ने इंटर्नशिप छात्रों को संबोधित किया और बिक्री में प्रदर्शित उत्पादों की कारीगरी की प्रशंसा की। छात्रों द्वारा बनाए गए उत्पादों जैसे कॉटन ब्लॉक प्रिंटेड टॉप, चुन्नी, स्क्रीन प्रिंटेड टॉप और टी–शर्ट, टाई एंड डाई कॉटन साड़ियाँ और डाइंग एंड प्रिंटेड साड़ियाँ का कुल मूल्य 33,000 रुपये था। प्रो. गारू ने डी.ई.आई. सेंटर के प्रशिक्षकों की सराहना की और अपने कॉलेज के छात्रों को बेहतरीन प्रशिक्षण देने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम को स्थानीय समाचार पत्रों ने व्यापक रूप से कवर किया।

करोल बाग सेंटर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

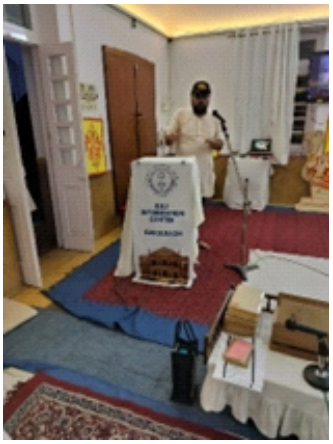

21 जून, 2024 को, डी.ई.आई. सूचना केंद्र, करोल बाग ने संकाय सदस्यों और करोल बाग शाखा सतसंग के सदस्यों की उत्साह और भागीदारी के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री राजीव ग्रोवर, केंद्र प्रभारी द्वारा श्रीमती वीना कुमारी को दर्शकों को आवश्यक आसनों से परिचित कराने के लिए आमंत्रित करने से हुई। उपस्थित लोगों ने उनके मार्गदर्शन में इन योग मुद्राओं का अभ्यास करने में उत्सुकता से भाग लिया। इसके बाद, श्री सौरभ कुमार ने हमारे दैनिक जीवन में योग के महत्व पर जोर दिया, इसके कई लाभों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के वैश्विक पालन पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत के साथ हुआ, जिसके बाद सभी उपस्थित लोगों को हल्का नाश्ता वितरित किया गया।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

इस अंक में धर्म के विचार पर जो लेख शामिल है, वह दयालबाग़ जीवन शैली से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। धर्म, 'वास्तविकता की शाश्वत और अंतर्निहित प्रकृति, सही व्यवहार और सामाजिक व्यवस्था के पीछे एक ब्रह्मांडीय नियम' है, जिसमें निस्वार्थ सेवा शामिल है अपने नैतिक दायित्वों और कर्तव्यों को पूरा करना ही धर्म के सिद्धांतों को बनाए रखना है। अगर हम व्यक्तिगत और स्वार्थी हितों को अलग रखकर दूसरों के लिए निस्वार्थ भाव से काम करें, तो इससे अंततः 'शांति, व्यवस्था और अच्छाई' आएगी। जो लोग दयालबाग़ मार्ग का अनुसरण करते हैं, वे धर्म के सिद्धांतों को बनाए रखते हैं। जीवन धन्य और सौभाग्यशाली है क्योंकि वे एक स्थायी स्वास्थ्य सेवा आवास का हिस्सा हैं – सादगी, शांति, सेवा और आध्यात्मिकता का जीवन। वे उपदेश नहीं देते बल्कि व्यावहारिक रूप से एक ऐसे मार्ग का अनुसरण करते हैं जो न तो सांसारिक है और न ही अलौकिक – 'बेहतर सांसारिकता' का मार्ग।

हम aadeisnewsletter@gmail.com पर आपकी टिप्पणियों और विचारों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

स्वास्थ्य और दयालबाग जीवन शैली

डॉ. शेलिका रत्नाकर
फिजियोथेरेपिस्ट, सरन आश्रम अस्पताल, दयालबाग़
सदस्य, *AADEIs*

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के बीच परस्पर संबंध समग्र स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। स्वस्थ आहार, व्यायाम और स्वस्थ परिवेश अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी हैं और ये तीनों कारक दयालबाग़ की जीवनशैली में स्वाभाविक रूप से समाहित हैं। साझा सामुदायिक रसोई, दैनिक क्षेत्र कार्य, आध्यात्मिक गतिविधियाँ, शांत, निर्मल और प्रदूषण मुक्त वातावरण दयालबाग़ में जीवन की मुख्य विशेषताएँ हैं। श्रम की गरिमा, सामुदायिक सेवा और आध्यात्मिक रूप से सक्रिय वातावरण प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय रखता है।

मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य से ज़्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि 80% से ज़्यादा बीमारियाँ मनोदैहिक होती हैं। मन शरीर से ज़्यादा जटिल है। शरीर के अंगों और प्रणालियों का भौतिक अस्तित्व होता है लेकिन मन और मानसिक प्रक्रियाएँ निर्माण हैं यानी सिर्फ व्यवहार से ही अनुमान लगाया जा सकता है, जैसे सोचना, सीखना, धारणा आदि। इसी तरह, आ ई डी, अहंकार और सुपरइगो की फ्रायडियन अवधारणाएँ, जो मानसिक तंत्र में तीन अलग–अलग परस्पर क्रिया करने वाले एजेंट हैं, भी सैद्धांतिक निर्माण हैं। फिर से, चेतन, अवचेतन और अचेतन मन शब्दों का कोई भौतिक अर्थ नहीं है संरचना या अस्तित्वय वे फ्रायड द्वारा कल्पित हैं और निर्माण हैं। निर्माणों का प्रयोगात्मक रूप से परीक्षण या जांच आसानी से नहीं की जा सकती।

स्वस्थ व्यक्तित्व के विकास के लिए मानसिक स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें हमारी भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भलाई शामिल है और यह हमें तनाव और चिंता से निपटने में सक्षम बनाता है, हमें अपनी क्षमताओं का एहसास कराता है, ताकि हम अच्छी तरह से सीख सकें और काम कर सकें और समुदाय और समाज में व्यापक रूप से योगदान दें। अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का आंतरिक और महत्वपूर्ण महत्व है और यह हमारी भलाई का अभिन्न अंग है।यह व्यक्ति के साथ–साथ समुदाय और समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। हम चिंता और तनाव के युग में रह रहे हैं। क्रोनिक तनाव हमारे समय की पहचान है। दूसरे शब्दों में, चिंता एक तरह की बीमारी बन गई है सांस्कृतिक स्थिति। यह अक्सर अवसाद की ओर ले जाता है, जो एक मानसिक स्वास्थ्य विकार है और दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण हानि का कारण बनता है। अवसाद की गंभीरता हल्के, अस्थायी उदासी के प्रकरणों से लेकर गंभीर लगातार अवसाद तक होती है। नैदानिक अवसाद जो अधिक गंभीर है, बहुत आम है और भारत में हर साल 10 मिलियन से ज़्यादा मामले सामने आते हैं। लगभग सभी लोग उदासी या अवसाद के हल्के या अस्थायी दौरों का अनुभव करते हैं।

इस संदर्भ में, मानव संज्ञान के महत्व का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है जो मानसिक प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला को संदर्भित करता है जिसका व्यक्ति के व्यवहार पर अलग–अलग डिग्री का प्रभाव हो सकता है। इनमें धारणाएं, विश्वास, विचार, छवियां और प्रसंस्करण, कोडिंग और सिस्टम शामिल हैं। जानकारी प्राप्त करना। संज्ञान, अनुपयुक्त व्यवहारों के कारण और रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाता है। मौलिक विश्वास यह है कि लोग अपने आस–पास होने वाली घटनाओं से नहीं बल्कि उनके बारे में उनके दृष्टिकोण से परेशान होते हैं। मनोवैज्ञानिक समस्याएँ विश्वासों, दर्शनशास्त्रों से उत्पन्न होती हैं, और सोच के दोषपूर्ण या तर्कहीन पैटर्न। अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और उसके बाद अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए, यह महत्वपूर्ण है स्वस्थ और तर्कसंगत अनुभूति विकसित करें। दयालबाग जीवन शैली अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए अनुकूल है क्योंकि लोगों के पास योजनाबद्ध, उत्पादक, व्यस्त दैनिक कार्यक्रम, स्वस्थ, तनाव मुक्त वातावरण और आध्यात्मिक मार्गदर्शन है जो आंतरिक शांति और संतुष्टि की ओर ले जाता है। यह एक आदर्श है जीवन शैली, जो मानव की उच्च स्तरीय आवश्यकताओं अर्थात् आत्म–सम्मान और आत्म–सिद्धि को संतुष्ट करती है।

महाभारत में धर्म के विचार पर चिंतन

डॉ. स्मिता सहगल

धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2013), एम ए धर्मशास्त्र (2021), डी.ई.आई.

वर्तमान में, एल एस आर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर

महाभारत में धर्म शब्द एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, यह एक विशाल महाकाव्य है जिसमें एक केंद्रीय कथा और कई उप–कहानियाँ शामिल हैं। धर्म की अवधारणा महाकाव्य के ताने–बाने में जटिल रूप से बुनी गई है, और इस शब्द का इस्तेमाल कई संदर्भों में किया गया है , प्रत्येक अपनी अनूठी बारीकियों और अर्थों को समेटे हुए है। यह समृद्ध जटिलता पाठकों को चुनौती दे सकती है, लेकिन यह एक उत्तेजक बौद्धिक यात्रा भी प्रदान करती है।

''धर्म'' शब्द को अक्सर धार्मिक माना जाता है, लेकिन शुरुआती ग्रंथों में इसका मूल अर्थ अलग था। संस्कृत का मूल शब्द ''ध्र'' है, जिसका अर्थ है ''समर्थन करना'' या ''बनाए रखना।'' संक्षेप में, यह संदर्भित करता है वह जो जीवन को बनाए रखता है और सहारा देता है। प्राचीन उपयोग में, ''धर्म'' का इस्तेमाल अक्सर नैतिक क्षेत्र को उसके व्यापक अर्थ में संदर्भित करने के लिए किया जाता था, जिसमें नैतिकता को एक आदर्श के रूप में शामिल किया जाता था – मानवता की अच्छाई, सही और न्यायपूर्ण की शाश्वत खोज – साथ ही मानवीय क्रियाकलापों का मार्गदर्शन करने वाले मानदंडों, नियमों, कहावतों और सिद्धांतों का वास्तविक ढांचा भी। यह ''पुरुषार्थ'' या मनुष्य के चार लक्ष्यों के सिद्धांत का अभिन्न अंग था, जो अर्थ (सफलता/भौतिक संपत्ति), काम (जुनून/प्रजनन), धर्म (पुण्य/धार्मिक कर्तव्य), और मोक्ष (आत्म–पूर्णता)। ये चारों स्वाभाविक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

पांडव भाइयों में सबसे बड़े युधिष्ठिर, जो वर्णाश्रम धर्म या स्वधर्म का पालन करने की आवश्यकता से स्पष्ट रूप से असहज थे, इस पर सबसे अधिक ध्यान देते हैं। इस मामले में, उनका कर्तव्य क्षत्रिय धर्म का पालन करना था जिसमें हिंसा और गोद लेने का निरंतर उपयोग शामिल था। कौरवों से भूमि का दावा करने या क्षेत्र का विस्तार करने के लिए आक्रामक रुख अपनाने का। युधिष्ठिर युद्ध या मौखिक हिंसा से घृणा करते थे और अक्सर खुद को अपनी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने के लिए मजबूर पाते थे। उन्हें आधी बात बोलने के लिए बाध्य किया गया था। द्रोणाचार्य को अश्वत्थामा की मृत्यु के बारे में सच्चाई बताई, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। इससे वे बहुत दुखी हुए और महायुद्ध के बाद, उन्होंने खुलेआम घोषणा की कि वे स्वयं रक्तपात के लिए जिम्मेदार हैं, और विधवाओं से उन्हें श्राप देने के लिए कहने की हद तक चले गए। उन्होंने अपने मार्ग में बदलाव किया संन्यास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए उन्हें अपने बुजुर्गों, खास तौर पर भीष्म पितामह ने सलाह दी कि वे अपना कर्तव्य (स्वधर्म) निभाएं और राजपद ग्रहण करें। भीष्म पितामह ने उनके साथ (शांतिपर्व में) एक लंबी बातचीत की, जिसमें अनिच्छुक युधिष्ठिर को यह विश्वास हो गया कि उन्हें अपना धर्म अपनाना चाहिए। राजधर्म (राजा की जिम्मेदारी) और जब भी आवश्यकता हो आपद्धर्म (आवश्यकता के समय कानून) का पालन करना। लेकिन युधिष्ठिर फिर भी आश्वस्त नहीं हुए और उन्होंने भीष्म को यह बताने के लिए प्रेरित किया कि क्या कोई शासक मोक्षधर्म (शाश्वत पारलौकिक कानून) का भी पालन कर सकता है। वह वास्तव में इस बात को लेकर चिंतित था कि क्या उसका राजधर्म उसे सूक्ष्मधर्म (सूक्ष्म चेतना का अभ्यास) करने की अनुमति देगा, जिसके वह सबसे करीब महसूस करता था। यह तभी संभव हुआ जब भीष्म पितामह ने उसे आश्वस्त किया कि वह अपने सांसारिक कर्तव्यों को निष्पक्षता से पूरा करके ऐसा कर सकता है। कि वह सिंहासन पर चढ़ने के लिए प्रोत्साहित महसूस करता है। युधिष्ठिर करुणा और अहिंसा के तत्वों को जोड़कर क्षत्रिय धर्म को फिर से परिभाषित करने में भी सक्षम थेः एक योद्धा राजा के स्वीकार्य गुणों के रूप में अनृशंस्य और अहिंसा। उन्होंने सुझाव दिया कि हिंसा अंतिम उपाय होना चाहिए, न कि क्षत्रिय का प्राथमिक गुण। युधिष्ठिर, तब स्वधर्म की धारणा में बदलाव लाकर सूक्ष्मधर्म के विचार को बुनने में सक्षम थे। अपने आध्यात्मिक उत्थान का अभ्यास जारी रखते हुए अपने सांसारिक कर्तव्यों को पूरा करने का यह विचार भगवद्गीता और आधुनिक संतमत में प्रतिध्वनित होता है। परंपराएं भी.

एक आह्वान

प्रिया सिंह

बैचः एम बी एम (1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2012), डी.ई.आई.
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डी.ई.आई. चेन्नई सूचना केंद्र

अपनी हथेली में रख लीजिये हमे
दृढ़ता से खड़े रहने की शक्ति प्रदान कीजिये हमे,
जीवन में हम किसी भी परिस्थिति में पड़ जाएँ,
हमारा हाथ पकड़ कर, संभाल लीजिये हमे।

अपनी निगरानी और संरक्षण में रखना हमे,
अपने दिशा निर्देश का पालन करने का साहस देना हमे,
हर कदम पर हमारा मार्ग दर्शन कीजिये,
कभी न भटकने देना, राह में हमे।

अनियमित प्रेम और करुणा का आशीर्वाद दीजिये,
अत्याचार के विरुद्ध खड़े होने का साहस प्रदान कीजिये,
युद्ध या हिंसा के लिए हम कोई जमीन न छोड़ें,
आओ, चारों ओर सर्वव्यापी भाईचारा व शांति फैलाएं।

आप ही की अंश है हमारी सुरत,
सांसारिक धरातल पर उलझी हुई, मुक्त होने में असमर्थ,
केवल जब आप अपनी दया व कृपा की वर्षा करें,
खोज पायेगी हमारी सुरत, दयाल देश के पथ को।

तो अपनी हथेली में रख लीजिये हमे,
हमारा अंतर अपने प्रकाश से प्रकाशित कर दीजिये,
हमारी सुरत को उसकी अंतिम मंजिल तक पहुंचा दीजिये,
जहाँ आप में समाकर, मोक्ष को प्राप्त हो जाएँ।

पूर्व छात्रों की बाइट्स...

दयालबाग में शिक्षा से सबसे बड़ी उपलब्धि यह है...

"... मेरे व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। मैं लगातार दृढ़ता और विनम्रता के मूल्यों से प्रेरित रहा हूँ। कठोर पाठ्यक्रम, फील्डवर्क के साथ मिलकर छात्रों को पृथ्वी के साथ एक होने का मौका देता है, और धैर्य और दीनता (humility) के मूल्यों को विकसित करता है। साथ–साथ टीमवर्क और सहयोग का महत्व भी। इसके अलावा, मेरा मानना है कि DEI कैम्पस में बिताए मेरे समय ने मुझमें दूरदर्शिता और नवाचार की भावना के साथ–साथ समस्या–समाधान के लिए समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में मदद की। निस्संदेह, यह एक समृद्ध अनुभव था जिसने विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों और शीर्ष ब्रांडों में मेरी कॉर्पोरेट यात्रा के आधार के रूप में कार्य किया, मैं संस्थान और सभी मौजूदा छात्रों को शुभकामनाएं देता हूं, क्योंकि देश अवसरों के स्वर्ण युग में प्रवेश कर रहा है!"

–नवीन सक्सेना, मास्टर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, बैच 1994, डी.ई.आई.
वर्तमान में, हेड मार्केटिंग कंज्यूमर लाइटिंग, क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल लिमिटेड, मुंबई।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन
मुख्य संपादक: प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय बोर्ड: डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी, डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य: डॉ. चारु स्वामी, डॉ. नेहा जैन, डॉ. सौम्या सिन्हा, श्री आर.आर. सिंह, प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. वी. स्वामी दास, डॉ. रोहित राजवंशी, डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक: डॉ. नमस्या, डॉ. निशिथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन, प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान, प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल: डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मीना पायदा, डॉ. लौलीन मल्होत्रा, डॉ. बानी दयाल धीर, श्री राकेश मेहता

अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)

संपादक: प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति: डॉ. सरन कुमार सतसंगी, प्रो. साहब दास, डॉ. बानी दयाल धीर, श्रीमती शिफाली सत्संगी, श्रीमती अरुणा शर्मा, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. गुरप्यारी भटनागर, डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालयः 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस